दिनांक :- 10.07.2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- द्वितीय

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- संगम काल स्त्रोत

सामाजिक व्यवस्था :- प्राचीन तमिलह्म के समाज का स्वरूप मूलतः जनजातीय था परंतु कृषि क्षेत्र में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा था। धीरे-धीरे पुरानी नातेदारी व्यवस्था टूट रही थी एवं वैदिक वर्ण व्यवस्था स्थापित हो रही थी पुरनानुरू हो चार जातियों (कुडि) का उल्लेख मिलता है: तुडियन, पाणन, परैयम तथा कडम्बन। इनकी पहचान

Scanned with CamScanner

आर्यों के चार वर्णों से की जा सकती है। फिर भी संगम युग में स्पष्ट रूप से वर्ण विभाजन देखने को नहीं मिलता है। क्षत्रिय तथा वैश्य नियमित वर्ण नहीं थे। समाज एवं राजदरबार में ब्राह्मण की पर्याप्त प्रतिष्ठा स्थापित थी। यहाँ के ब्राह्मणों में मांसाहार का प्रचलन था परंतु इसको सामाजिक उपयुक्त नहीं माना जाता था। उत्तर से दक्षिण की तरफ आने वाले ब्राह्मण को वेदमार कहा जाता था।
शासक वर्ग को अरसर कहा जाता था। इस वर्ग के पश्चात वेल्लार का स्थान था।
वेल्लार का कृषि की अधिकांश भूमि पर नियंत्रण होता था। इसको प्रमुख वेलिर कहा जाता था।
चोल, चेर पांड्य राज्यों में सैनिक तथा असैनिक दोनों प्रकार के अधिकारियों के पद पर वेल्लार का नियंत्रण था। वेल्लार की दो श्रेणियाँ थी। जो धनी या सामंत सदृश

वेल्लार थे उनका समाज मे सम्मानजनक स्थान था उन्हे नागरिक एवं सैनिक पद दिये जाते थे! वे राजा के साथ युद्ध, शिकार तथा भोजन मे भाग लेते थे! राज परिवार से वे वैवाहिक संबंध रखते थे! ये अपनी खेती स्वंय नही करते थे बल्कि मजदूरो से करवाते थे! जबकि गरीब वेल्लारो की स्थिति दयनीय थी! ये स्वंय ही खेती करते थे

खेत मजदूर को कडेसिर कहा जाता था इसके अलावा आदियोर एवं विलय बल्लार शब्द का उल्लेख भी मिलता है

संगम युग में इसके अतिरिक्त भी अनेक व्यवसायिक वर्ग थे! रस्सी की चारपाई बनाने वाले को पुलैयन कहा जाता था! मलवर नामक जाति तमिल प्रदेश की उत्तरी सीमा पर रहती थी! इसका पेशा डाका डालना था एनियर शिकारियो की जाति थी!

संगम युग में हमे तीव्र सामाजिक विषमता का भी बोध होता है! धनी लोगो का जीवन सभी सुविधाओ से परिपूर्ण

Scanned with CamScanner

आ इनके घर ईंट तथा सुरखी से निर्मित होते थे जबकि गरीब लोग झुग्गी-झोपड़ियों में रहते थे। इस काल में अस्पृश्यता थी परंतु दास प्रथा नहीं थी।

अन्य जाति
कोल्लम — कुछ विशेष पेशों के लोहार

तच्चन — बढ़ई
वैणानिकम — वस्त्रों का व्यापारी
कंबन — नमक का व्यापारी
कुलवा — अनाज का व्यापारी
पोन वणिकम् — सोने का व्यापारी

परवर्ती काल में ये व्यापारी समुदाय वर्ण व्यवस्था के तहत आ गये। व्यापारी वर्ग को संगम साहित्य में चेत्तियैकहा गया है। इसी से चेट्टी समुदाय का विकास हुआ।

स्त्रियों की स्थिति :—
समाज में स्त्रियों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। उच्च वर्ग की स्त्रियां ललितकला की शिक्षा पाती थी। तोल्काप्पियम के अनुसार विवाह को एक संस्कार के रूप में स्थापित किया गया था। इस ग्रंथ में आर्यों के

Scanned with CamScanner

समान दो आठ प्रकार के विवाह का उल्लेख मिलता है।
विवाहोत्सव करनम कहलाता था। समाज में सती प्रथा
को कन्नगी की पूजा से प्रोत्साहन मिला।
मणिमेखलई नामक ग्रंथ में सती प्रथा का दृष्टांत मिलता है
इस काल में लड़के के विवाह की आयु 18 वर्ष तथा लड़की
की 12 वर्ष होती है।
स्त्री एवं पुरुष के सहज प्रणय को पाँच तिन्नई कहा जाता
था।
एक पक्षीय प्रेम को कैक्किलै कहा जाता था।
औचित्यहीन प्रेम को पेरुन्दिणै कहा जाता था।
धर्म :→
ऋग्वेद के उल्लिखित उत्तरी भाग में आर्य-दस्यु
संघर्ष के समान दक्षिणी और उत्तरी भारत के सांस्कृ
तिक संपर्क में संघर्ष के तत्व नहीं मिलते। संगम साहित्य
से ज्ञात होता है कि तमिल देश में वैदिक संस्कृति का
स्वागत किया गया।
तमिल प्रदेश में भी ऋषि अगस्त्य तथा कौण्डिण्य का

Scanned with CamScanner

पर्याप्त प्रभाव था। दक्षिण में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में इन दोनों की प्रमुख भूमिका थी।

दक्षिण में अनेक मंदिर अगस्तेश्वर नाम से प्रसिद्ध है जहाँ शिव की मूर्तियाँ स्थापित हैं। एक परंपरा के अनुसार पांड्य राजवंश पुरोहित अगस्त्य गोत्रीय ब्राह्मण दो होते थे।
ऐसे ही परंपरागत अनुश्रुति में ऐसा माना जाता है कि तमिल भाषा तथा व्याकरण की उत्पत्ति अगस्त्य ने की। पुरनानुरु तथा तोल्काप्पियम के अनुसार अगस्त्य का संबंध द्वारका से था।

महाभारत तथा पुराणों में भी दक्षिण में कृषि के विस्तार से अगस्त्य का संबंध स्पष्ट रूप से जोड़ा गया है।

मृतक संस्कार के दो रूप थे :- (1) अग्नि संस्कार
तमिल देवता :- दक्षिण भारत में मुरुगन की उपासना सबसे प्राचीन है। कालांतर में मुरुगन का नाम सुब्रमण्यम

Scanned with CamScanner

हो गया और स्कंद कार्तिकेय से इस देवता का एकीकरण
हो गया। कहीं पर कार्तिकेय को अग्नि का तो कहीं परकृति
का का तथा कहीं पर गंगा तथा कहीं शिव का पुत्र बताया
गया है
मुरूगन का दूसरा नाम वेलन भी मिलता है वेलन का संबंध
वेल से है जिसका अर्थ वर्छा होता है जो इस देवता का प्रमुख
अस्त्र है।
दक्षिण की परंपरा मे मुरुगन का प्रतीक मुर्गा है जिसे पर्वत
शिखर पर क्रीड़ा करना अत्यंत प्रिय है। मुरूगन शिकारियों
के भी देवता थे।
दक्षिण की परंपरा मे मुरूगन का प्रतीक मुर्गा है जिसे पर्वत
शिखर पर मुरूगन की पत्नियो मे से एक कुरूवस नामक
पर्वतीय जनजाति की स्त्री भी है। पुहार मे इंद्र की सम्मान
मे उत्सव मनाया जाता था कोरनावई विजय की देवी थी।
बटेलिए जाति के लोग कोइलै की उपासना करते थे तथा पशुचारक
कृष्ण की पूजा करते थे पदितुप्पत्तु से ज्ञात होता है।